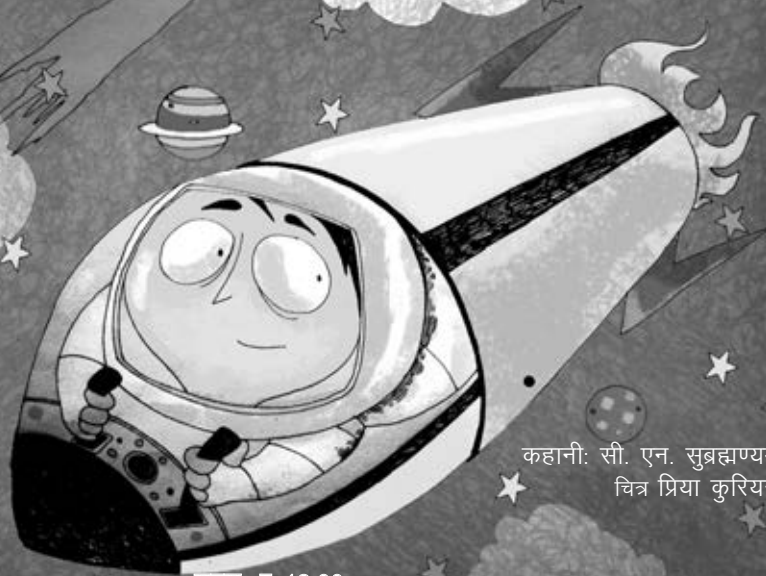


हलीम चला चाँद पर



कहानी: सी. एन. सुब्रह्मण्यम्
चित्र प्रिया कुरियन



एकलव्य

मूल्य: ₹ 12.00






हलीम ने एक दिन सोचा, आज मैं चाँद
पर जाऊँगा।



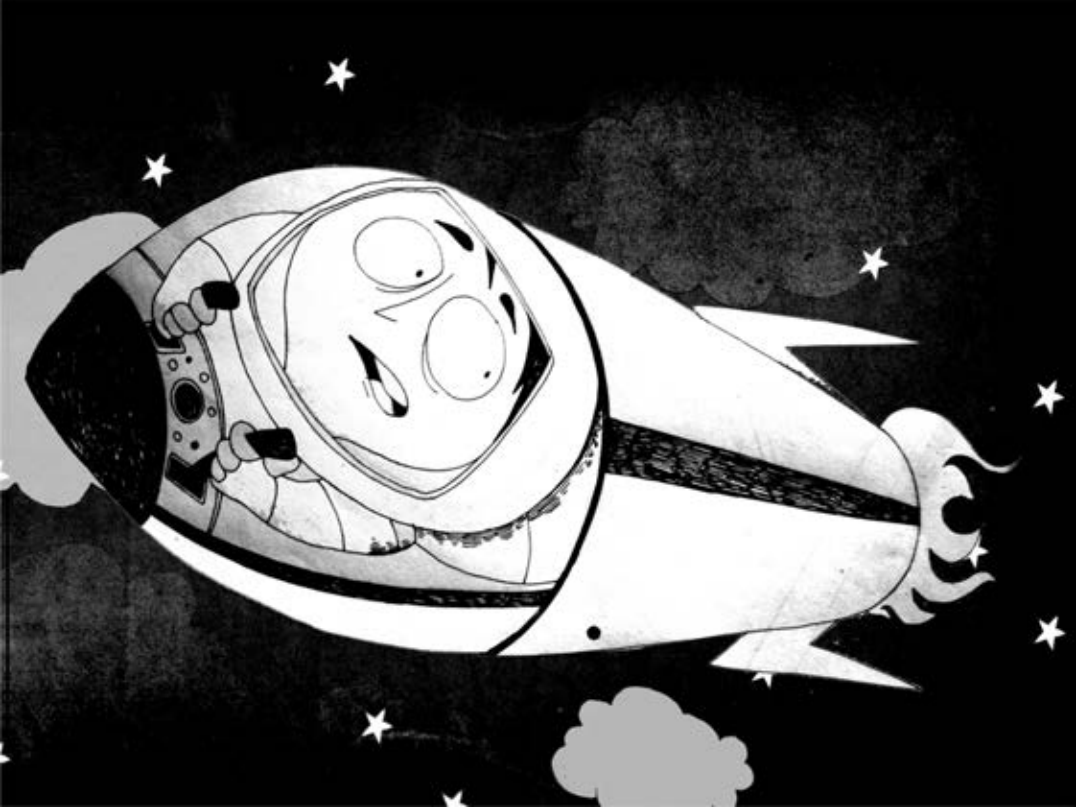
रीकेट कारखाना



वह रॉकेट के कारखाने
में गया और एक रॉकेट
पर बैठकर चल दिया।



चलते-चलते अँधेरा हो गया। हलीम
को डर लगने लगा। उसको तो चाँद
तक का रास्ता पता नहीं था।







★ थोड़ी देर में उसे चाँद दिखा
और वह खुश हो गया।





चाँद पर हलीम को खूब
सारे गड्ढे दिखे और
बड़े-बड़े पहाड़ भी ।

लेकिन वहाँ कोई पेड़ या जानवर नहीं थे।
लोग भी नहीं थे।







★ हलीम ने सोचा, यह भी कोई जगह है!
★ चलो वापिस घर चलें। वह रॉकेट
★ में बैठकर घर लौट आया।





प्रकाशक: एकलव्य फाउंडेशन
जमनालाल बजाज परिसर जाटखेड़ी,
भोपाल - 462 026 (मप्र)
फोन: +91 755 297 7770-71-72 द्वारा
प्रकाशित व भण्डारी प्रेस भोपाल से मुद्रित।
मई 2023 (5000 प्रतियाँ)